VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध
ESSAY

*निर्धारित समय: **तीन** घंटे*
*Time Allowed: **Three** Hours*

टेस्ट कोड / Test Code : 2488

*अधिकतम अंक: **250***
*Maximum Marks: **250***

सामान्य अनुदेश

इस प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका में 32+2 पृष्ठ हैं। प्रश्न-पत्र, क्यू.सी.ए. पुस्तिका के अंत में संलग्न है, जो अलग (वियोज्य) किया जा सकता है और उम्मीदवार परीक्षा के उपरांत अपने साथ ले जा सकते हैं।

रफ कार्य के लिए तीन खाली पृष्ठ (पृष्ठ संख्या. 30-32) दिए गए हैं।

पुस्तिका प्राप्त होने पर, कृपया यह जांच कर लें कि इस क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कोई कमी न हो, फटा हुआ पृष्ठ न हो अथवा कोई पृष्ठ गायब न हो इत्यादि। यदि ऐसा हो, तो इसके बदले नई क्यू.सी.ए. पुस्तिका प्राप्त कर लें।

General Instructions

This Question-cum-Answer (QCA) Booklet contains 33+2 pages. Question Paper in detachable form is available at the end of the QCA Booklet which can be taken away by the candidate after examination.

Three blank pages (Page Nos. 30–32) have been provided for rough work.

On receipt of the Booklet, please check that this QCA Booklet does not have any shortcomings, torn or missing pages etc. If so, get it replaced with a fresh QCA Booklet.

(उम्मीदवार द्वारा भरा जाएगा/To be filled by the Candidate)

पंजीकरण सं./Registration No. : 520497

अभ्यर्थी का नाम/Name of Student : Devesh Parashar.

माध्यम: हिंदी/अंग्रेजी
Medium: Hindi/English
Hindi medium.

तारीख
Date
25/08/2023

निबंध
ESSAY

केंद्र
Centre Karol Bagh. Delhi.

निरीक्षक के हस्ताक्षर
Invigilator's Signature

VISIONIAS

	महत्वपूर्ण अनुदेश	Important Instructions
	उम्मीदवार को नीचे उल्लिखित निर्देश सावधानी से पढ़ लेने चाहिए। किसी भी निर्देश का उल्लंघन करने पर उम्मीदवार को मिलने वाले अंकों में कटौती, उम्मीदवारी रद्द, आयोग के परवर्ती परीक्षाओं के लिए वर्जित करने इत्यादि के रूप में दण्डित किया जा सकता है।	**Candidate should read the undermentioned instructions carefully. Violation of any of the following instructions may entail penalty in the form of deduction of marks, cancellation of candidature, debarment from further Examination of the Commission etc.**
1	(क) अपना पंजीकरण सं. एवं अन्य विवरण केवल प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) में उम्मीदवार के लिए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। (ख) इस पुस्तिका में अन्यत्र कहीं भी अपना नाम, पंजीकरण सं., मोबाइल नं., पता अथवा प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) संख्या न लिखें जिससे आपकी पहचान का खुलासा हो।	(a) Write your Registration Number and other details only in the space provided in the Question-Cum-Answer (QCA) Booklet for candidates. (b) Do not disclose your identity in any manner such as, by writing your Name, Registration number, Mobile number, Address, Question-Cum-Answer (QCA) Booklet No. etc. elsewhere in the Booklet
2	अपनी क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कहीं भी प्रश्नों के वास्तविक उत्तर के अतिरिक्त कुछ न लिखें जैसे कि कोई कविता/दोहा, अभद्र या अपमानजनक अभिव्यक्ति इत्यादि और न ही कोई ऐसा चिन्ह/निशान बनाएं जिसका उत्तर से सम्बन्ध न हो।	Do not write in the QCA Booklet anything other than the actual answer such as couplet, obscene, abusive expression etc., nor put any sign/mark having no relevance to the answer.
3	परीक्षक को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से कोई भी प्रार्थना/धमकी भरी बातें न लिखें।	Do not make any direct/indirect appeal/threat to the examiner.
4	उत्तर अस्पष्ट अथवा गंदी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तर का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।	Do not write answers in bad/illegible handwriting. Such answers may not be evaluated.
5	उत्तर स्याही में ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें, हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।	Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answers. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.
6	प्रवेश पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली जुली भाषा का भी उपयोग न करें।	Do not write answers in medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language either i.e. authorize and unauthorized media together for writing answers.
7	प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।	Write answer at the specific space (right below the question) only. Answers written elsewhere at unspecified places in the booklet shall not be evaluated.
8	यदि आप अपने किसी उत्तर को रद्द करना चाहते हैं तो उसे पेन से काट दें तथा उस पर "रद्द" लिख दें, अन्यथा उसका मूल्यांकन किया जा सकता है।	If you wish to cancel any work, draw your pen through it and write "Cancelled" across it, otherwise it may be valued.

VISIONIAS

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध

निर्धारित समय: तीन घंटे	**टेस्ट कोड : 2488**	अधिकतम अंक: 250

प्रश्न-पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबंध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ व पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

ESSAY

Time Allowed : Three Hours	**Test Code : 2488**	Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

World limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

VISION IAS

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खंड A और B प्रत्येक से **एक-एक** विषय चुनकर **दो** निबंध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों में हो :

Write **two** essays, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each : 125 x 2 = 250

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

   It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।

   A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।

   Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।

   History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।

   The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।

   The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।

   Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।

   Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

   It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।

   A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।

   Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।

   History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

"बच्चा मनुष्य का पिता होता है।"

ऊपर लिखा कथन यह दर्शा रहा है कि हम बच्चों से क्या कुछ नहीं सीख सकते। और यदि हम उन्हें सिखाने में सफल रहे तो फिर कहने ही क्या।

वस्तुतः मानव जीवन के विकास की क्रमिक अवस्थाएँ हैं। पहले बच्चा फिर किशोर एवं वयस्क और फिर वृद्ध। इन सभी अवस्थाओं में आशावाद और सकारात्मकता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बिना आशा के एक ताकतवर पहलवान भी बौने बच्चे जो कि अदम्य जिजीविषा लिए हुए है, से मुँह की खा सकता है।

एक टूटा हुआ वयस्क निराशावाद और चिंता से घिरा व्यक्तित्व होता है जिसमें परिस्थितियों का सामना करने और समस्याओं का सामना करने की क्षमता शेष नहीं रह जाती है। यह वास्तविकता में वह स्थिति जहाँ कोई व्यक्ति अपनी संभावनाओं एवं आकांक्षाओं से इन्कार कर देता

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

है और विरक्ति को गले लगा लेता है। ऐसे में अंतर्मन से समाई इस हताश चेतना को बदल पाना बहुत जटिल काम है।

वहीं दूसरी ओर बच्चों की स्थिति पर विचार करें तो हमें समझ आता है कि ये एक कोरी पटिया, जिससे लॉक टैबुला रसा कहते हैं, के समान है। इन पर हम जैसे चाहें वैसे विचार अंकित कर सकते हैं और उनके व्यक्तित्व को वांछित दिशा में मोड़ सकते हैं। यह बिलकुल वैसा है जो ठहरे जल को दिशा देना असंभव है, वह सड़ जाता है, लेकिन बहता जल इच्छा स्वरूप दिशा में मोड़ा जाता है और वह लगातार बहते हुए साफ व स्वच्छ बना रहता है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

इसे हम कुम्हार के घड़े के उदाहरण द्वारा सरलता से समझ सकते हैं। जैसे कुम्हार जब एक पके घड़े पर चोट करता है तो वह घड़ा टूट कर बिखर जाता है। उसे वांछित आकार में नहीं ढाला जा सकता है। इसीलिए वह कच्चे घड़े पर चोट करता है क्योंकि वह अपनी प्रारंभिक अवस्था में है उसे आकार देना आसान है, नई आकृतियाँ गढ़ना सरल है।

दरअसल यह आशावाद बनाम निराशावाद की लड़ाई है। आशावादी हर अवसर का लाभ उठाता है और निराशावादी को यह अवसर ही दिखाई नहीं देता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विचार करें तो धर्म बनाम राज्य की लड़ाई कुलीनों या सामंतों के नहीं

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

बीती बातें हम नई पीढ़ी ने बीती जिसने लोकतंत्र की नई मशाल जलाना सीखी और सिखाई। इलीन और आनंद तो चर्चे अतीत बनकर हुए जिन्होंने उम्र की नवीनता को स्वीकार कर लिया।

जब भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर विचार किया जाए तो हम पाते हैं कि कैसे उदारवादी नीतियों के विरोध में उग्रवादी और क्रांतिकारी विचारधाराओं का युग का सूत्रपात हुआ। सरकार की प्रणाली के अभ्यस्त उदारवादी पत्र-प्रार्थना के दृष्टिकोण से ग्रस्त थे और ब्रिटिशों के विरुद्ध किसी भी सीधी कार्रवाई से बच रहे थे। लेकिन नव पीढ़ी ने इसे गलत समझा और ब्रिटिशों से सीधे दो-दो हाथ किए और जनता में राष्ट्रीय संग्राम को

लोकप्रिय बनाकर एक आंदोलन के रूप में स्थापित किया।

एक टूटे हुए व्यक्ति की सबसे बड़ी खामी यह है कि वह परिस्थितियों से संतुष्ट हो जाता है और नकारात्मक प्रवृति को त्याग देता है। इस संतोष के साथ न तो जीवन के नए आयामों की खोज की जा सकती है और न ही उन आयामों को साकार किया जा सकता है। इसीलिए सुकरात द्वारा कहा गया था कि - "एक असंतुष्ट मनुष्य, एक संतुष्ट शूकर की तुलना में बेहतर है।" यही कारण है कि एक टूटे हुए युवक को पुनः अवलम्बन लाना कठिन मालूम होता है।

अगर हम भारतपर दृष्टि डाले तो यह विश्व का सबसे

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

युवा देश है। जिसकी लगभग पचास फीसदी से अधिक जनसंख्या की आयु 30 वर्ष से कम है। ऐसे में हमारे लिए यह जरूरी है कि निराशाओं व विसंगतियों से दूर मजबूत बच्चों का निर्माण किया जाए क्योंकि यही बच्चे आगे चलकर राष्ट्र निर्माण में अपना अतुलनीय योगदान देंगे। इसीलिए सरकार ~~द्वारा~~ द्वारा नई शिक्षा नीति, कौशल भारत अभियान जैसी पहलें की जा रही है ताकि नई मजबूत पीढ़ी का निर्माण हो सके।

भारतीय परंपरा में चार पुरुषार्थों और चार आश्रमों की अवधारणा भी एक रोचक तथ्य प्रस्तुत करती है। इसमें पहला आश्रम ब्रह्मचर्य है जहाँ भी बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण,

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उनके पठन-पाठन और क्षमताओं के विकास पर बल दिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि बाल्यता की स्थिति में हमारे जीवन के मूल्य एवं विचार स्थापित हो चुके होते हैं जिन्हें बदलना आसान नहीं होता है। इसीलिए यह प्रारंभिक अवस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी गई है।

यहाँ हम जीनियस पक्षी का उदाहरण ले सकते हैं जो एक आयु प्राप्त करने के बाद जलकर मर जाते हैं और पुनः अपनी राख से पुनः एक शिशु के रूप में नया जीवन प्राप्त करते हैं। यह नई संभावनाओं और क्षमताओं के तलाशने का एक बेहतरीन उदाहरण है।

वास्तव में यह निरर्थक एवं छूट हुए कार्यों की ही स्थिति की

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

जिन्होंने नाजीवाद के प्रसार में सहायता की जिसने अंततः पूरे विश्व को द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका में धकेल दिया।

अब हमारे लिए यह पहले से अधिक स्पष्ट है कि मनों टूटे हुए बालक की मरम्मत से बेहतर है मजबूत बच्चों का निर्माण करना। लेकिन फिर यह सवाल खड़ा होता है कि यह निर्माण किया कैसे जाए? कैसे इस प्रवृत्ति को जीवित किया जाए जो आने वाले कल को आशा की नज़रों से देखे और कुछ कमाल कर दिखाए?

मजबूत बच्चों के निर्माण की पहलू आवश्यकता है उनका सकारात्मक समाजीकरण क्योंकि यह नकारात्मक समाजीकरण का ही

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

परिणाम था की जनक निराशा के कारण हताश हो गए यही समालोचना विचारों में रचनात्मक भेद पैदा करता है और जीवन एवं समाज की ओर उन्मत्त बनाने के लिए आधारभूत पृष्ठभूमि को स्थापित करता है।

दूसरा और वर्तमान विश्व में जरूरी आवश्यक है तार्किकता व वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास ताकि वर्तमान यथार्थता को समझा जा सके और ~~उसके~~ उसके अनुरूप व्यवहार किया जा सके। यह मूल कर्तव्यों के रूप में भारतीय संविधान द्वारा भी अधिरेखित है।

इस दिशा में हम <u>महात्मा</u> ~~गांधी~~ <u>बुद्ध</u> द्वारा सीख सकते है <u>जिन्होंने</u> अपने जीवन की अंतिम अवस्था तक समाज में सकारात्मक सुधार की चाह

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

को नहीं छोड़ा और निरंतर मजबूत पीढ़ी को शिक्षा देते गए। वहीं बाबा साहब अंबेडकर का यह कहना की "शिक्षित बनो। संगठित रहो। संघर्ष करो।" यही संदेश देता है कि किस प्रकार एक मजबूत चरित्र का निर्माण होता है।

हमारे पूर्व राष्ट्रपति A.P.J. अब्दुल कलाम इस बात से भलीभाँति समझते थे। इसीलिए उन्होंने कहा कि "हम अपने बच्चों के भविष्य के निर्माण के लिए अपना वर्तमान का बलिदान करें।"

अंतिम रूप से यही कहा जा सकता है कि हमें अपनी आकांक्षाओं पर गौर करना चाहिए ना कि अपनी खामियों को पीछे लगातार भागते रहना चाहिए। जीवन कुछ रूप में

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए Candidates must not write on this margin

तब स्थापित होता है जब हम "हमने क्या किया" से "हम और क्या कर सकते हैं" के दृष्टिकोण की ओर बढ़ते हैं। यही यथार्थ अस्तित्व है तभी हम नई संभावनाओं को साकार कर पाएंगे और एक मजबूत राष्ट्र बनने की दिशा में देश के हर नागरिक को गतिशील बना पाएंगे जिसका इंतजार समय को भी है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खण्ड – B / SECTION – B

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।

The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।

The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।

Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।

Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

"अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।"

"इस नदी की धार से ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है,
एक चिंगारी कहीं से ढूँढ लाओ दोस्तों,
इस दिए में तेल से भी हुई बाती तो है।"

- दुष्यंत कुमार

दुष्यंत कुमार जी द्वारा कही गई ये पंक्तियां बेहद खूबसूरती के साथ

विषय और जीवन के मूल को आच्छादित कर रही है। ये बता रही है कि क्यों हमें रोशनी की ओर देखते रहना चाहिए और कैसे रोशनी की नौका हमें अवसाद से पार लगाती है।

वस्तुत: मानव सभ्यता के इतने लंबे इतिहास में समय के साथ सभ्यताओं ने नित नए मोड़ लिए हैं और संस्कृतियों ने नित नई करवटें बदली है। लेकिन जो शाश्वत रहा है वह है रोशनी और छाया के बीच का द्वंद्व। इसी द्वंद्व में कभी रोशनी तो कभी छाया की प्रभाविता हमारे जीवन में दिखाई दी है।

वास्तविकता में यही जीवन का फलसफा भी है। कोई केवल रोशनी का हाथ थाम कर भारत का पहला हरियाणवित आईएएस अधिकारी बन जाता है तो कोई दबाव में

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

आखिर आत्महत्या कर लेता है। इसीलिए विंस्टन चर्चिल द्वारा कहा गया है कि " एक निराशावादी को हर अवसर में कठिनाई दिखती है और एक आशावादी को हर कठिनाई में अवसर।"

रोशनी और छाया की लड़ाई या प्रभाविता जीवन के हर क्षेत्र में देखने को मिलती है। हम अगर इतिहास के पन्नों को पलटें तो नज़र आता है कि कैसे अमेरिकी और फ्रांसिसी क्रांतियों ने स्वतंत्रता की रोशनी को उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की छाया पर वरीयता दी।

अगर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर विचार किया जाए तो यह बात साफ हो जाती है कि अगर आप अपने रोशन एवं सकारात्मक ध्येय की ओर पूरी लगन से ~~की ओर~~ के साथ बढ़ रहे हैं तो कोई अंधेरा छाया

उम्मीदवारों को इस-हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

आपको नहीं रोक सकती है। क्या यह संभव था कि भगत सिंह एवं महात्मा गांधी जैसे विराट व्यक्तित्वों का निर्माण रोशनी को भुलाकर छाया में घिरे रहते हुए हो पाता? बिल्कुल नहीं।

इसी तरह राजनीतिक जीवन को आधार लिया जाए। मध्यकाल में जहाँ धर्म ने सभी लोगों को अपनी छाया में लिया हुआ था, वहाँ गौरवपूर्ण क्रांति की रोशनी से ही हम लोकतंत्र की ओर बढ़ पाए। कॉपरनिकस और न्यूटन जैसे विद्वानों ने परंपरागत मान्यताओं पर वैज्ञानिक तलवारें चलाकर पुनर्जागरण का दौर लाया। यह सब रोशनी से ही तो संभव हो पाया।

इसी क्रम में अगर आर्थिक फलक को शामिल किया जाए तो बात और स्पष्ट हो जाती है। 1929 की

लोगों की मंदी से आज 'ट्रिलियन डॉलर इकॉनोमी' के दौर में पहुँचना आसान नहीं था। वहीं भारत को तो स्वतंत्रता के बाद गरीबी, अल्पतम जीवन प्रत्याशा, भयंकर बेरोजगारी जैसी समस्याओं ने घेरा था। इन सबसे कैसे बाहर आए? निश्चित ही पंचवर्षीय योजनाओं, 1991 के आर्थिक सुधारों के रोजगार योजनाओं के माध्यम से।

उदाहरण के तौर पर हम अर्थशास्त्री मुहम्मद यूनुस को देख सकते हैं जिन्होंने बांग्लादेश की व्यापक और गहन गरीबी में ग्रामीण बैंक क्रांति की रोशनी का हाथ थामा और बांग्लादेश की ग्रामीण आर्थिकी का कायापलट करके रख दिया। आज बांग्लादेश तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।

विज्ञान की दुनिया तो इस मामले में भरी ही सफलताओं से भरी पड़ी है। यहाँ बिना आशा एवं रोशन कल्पना के एक कदम भी चलना मुश्किल है। भारत ने क्या किया? चंद्रयान-2 की असफलता की आंच चंद्रयान-3 पर पड़ने दी या चंद्रयान-3 को नई रोशनी को आना? निश्चित नई रोशनी को था और दो कर दिखाया जिसे करने में अमेरिका रूस जैसी बड़ी शक्तियों के भी पसीने छूट गए। आज चंद्रमा की सतह पर उतरना इसी रोशनी का परिणाम है।

मैं एक उदाहरण द्वारा इस बात को कहना चाहूँगा। थॉमस एडीसन जिन्हें स्कूल से निकाल दिया गया और जिन्होंने बल्ब के अविष्कार से पहले 10000 असफलताएं देखी।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

सोचिए अगर एडीसन उन 10000 बाधाओं के घेरे में फंस जाते तो दुनिया को रोशन कर पाते? उत्तर आता है नहीं। यही है रोशनी की ओर देखना। इसीलिए बृहदारण्यक उपनिषद में कहा भी गया है कि- "असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय" अर्थात असत्य से सत्य की ओर बढ़ो, और अंधकार से रोशनी की ओर जाओ।

एक अन्य महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में आज समाज प्रगतिशील हो रहा है, महिलाओं की रक्षा के प्रयास हो रहा है जहाँ हमें इंदिरा गाँधी, इंदिरा नूई, दीपा मलिक जैसी रोशनी की किरणें नजर आ रही हैं। यह पितृसत्ता के अंधेरे से नहीं बल्कि राजा राममोहन राय,

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidate must not write on this margin

ईश्वरचंद विद्यासागर जैसे नेतृत्वकर्त्ताओं के अथक प्रयासों से निकली रोशनी का परिणाम है।

आज भारत में गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, कुपोषण जैसी समस्याओं का समाधान राष्ट्रीय पोषण मिशन, पीएम किसान योजना, कौशल भारत अभियान, डिजिटल इंडिया मिशन आदि जैसी योजनाओं के माध्यम से किया जा रहा है, ना कि अपनी कमजोरी या औपनिवेशिक शोषण का शोक मनाकर।

हमारी चर्चा को दार्शनिक समर्थन भी मिलता नजर आता है। महात्मा बुद्ध अपने आर्य सत्यों के "दुःख के निवारण" की संभावना व आख्यान बताते हुए आशावादी की ओर बढ़ने का संदेश देते हैं। अस्तित्ववादी सार्त्र का

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

कहना है कि मनुष्य को निष्क्रिय होने की अनुमति ही नहीं है। स्वतंत्रता और चयन से आगे बढ़ना तो मनुष्य की मान्यता है। उनका रोचक कथन है कि- "मनुष्य जो है वह नहीं है, बल्कि जो नहीं है, वह है।"

अब हमारे लिए रोशनी की महत्ता को समझना और छाया के न दिखाई देने का महत्व समझना मुश्किल नहीं है। इसीलिए विषय के दूसरे पक्ष पर भी विचार करना आवश्यक है। यह पक्ष है कि छाया के दिखाई न देने का मतलब उसे नज़र अंदाज़ करना नहीं है। ऐसा करके हम वास्तविकता और यथार्थता से दूर होकर जड़ बन जाते हैं और संभावना साकारीकरण की क्षमता खो जाती रहती है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidate must not write on this margin

हमें रोशनी की मदद से आंतरिक अंधकार के समापन का प्रयास निरंतर करते रहना चाहिए। जैसे कि भारत अपने जनसांख्यिकीय लाभ की रोशनी का लाभ कौशल अभाव एवं शिक्षित बेरोजगारी की छाया से बिना डर लिए नहीं उठा सकता। वैसे ही डिजिटल इंडिया मिशन के उद्देश्य को फलीभूत करने के लिए जरूरी है कि डिजिटल डिवाइड को कम किया जाए। इसके लिए निरंतर प्रयास करते रहने चाहिए। इन प्रयासों में भी हमें रोशनी का दामन कभी नहीं छोड़ना चाहिए। प्रसिद्ध शायर फ़ैज़-अहमद फ़ैज़ का एक शेर भी है कि-

"दिल ना उम्मीद तो नहीं, नाकाम ही तो है,
लंबी है ग़म की शाम मगर शाम ही तो है।"

www.visionias.in

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

अंतिम रूप से नहीं कहा जा सकता है कि रोशनी हमारे जीवन में सकारात्मक और रचनात्मक परिवर्तन लाती है और इसी की प्रतिती अनेकों अनेक सफलताओं में होती है। मानव का ऐसा कोई इतिहास नहीं रहा है जहाँ उसने हाथ पे रखकर, निष्क्रियता को धारण किए हुए कोई लक्ष्य प्राप्त किया हो। यह स्थिति भय, संकोच और आत्मग्लानि के अलावा कुछ और नहीं देती है।

स्वामी विवेकानंद का कहना है कि उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक की लक्ष्य प्राप्त ना हो जाए इसके लिए रोशनी यानी ज्ञान कौशल ज्ञान हमारे लिए सर्वाधिक ~~और~~ समीचीन है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

अंत में हमें कवि मैथिलीशरण गुप्त की उन पंक्तियों को याद कर लेना चाहिए जो हमें निराशा को त्याग निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दे रही हैं -

"नर हो न निराशा करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो,
इस जग में रहकर नाम करो।"

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

SPACE FOR ROUGH WORK

अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी

- मार्टिन लूथर किंग जूनियर
- विंस्टन चर्चिल एक निराशावादी को हर अवसर में ----
→ थॉमस एडिसन - 10000 असफलताओं में रोशनी
→ अब्राहम लिंकन
- भारत राष्ट्रीय आंदोलन ← सुभाष चंद्र / महात्मा गांधी
| नेल्सन मंडेला / विवेकानंद
- अमेरिकी क्रांति / फ्रांसीसी क्रांति → उपनिवेशवाद की आशा का → लोकतंत्र की रोशनी
- आर्थिक भारत - कई चुनौतियाँ - नीतियाँ → 1991 संकट - अर्थव्यवस्था गति पकड़ी
→ अंतरिक्ष में [illegible] की रोशनी देखी
स्वतंत्रता → पाकिस्तान [illegible]

जीवन की समस्याएं, कोई रोशनी, कोई [illegible]

कविता → [illegible] → कई [illegible]

[illegible] / संघर्ष

कोई [illegible] IAS तो कोई [illegible] आत्महत्या

असमानताएं / संस्कृति

जो [illegible] रोशनी

→ [illegible] की [illegible]

आशा का [illegible]

ऐतिहासिक / अमेरिकी / फ्रांसीसी क्रांति

भारत रा० आंदोलन - महात्मा गांधी

सामाजिक → [illegible] लोकतंत्र / [illegible] क्रांति

निराशा नकारात्मक

[illegible] → [illegible]

आशा

विज्ञान में अंधेरा ही रोशनी है

[illegible] / [illegible]

अंतरिक्ष - 3 / [illegible]

SPACE FOR ROUGH WORK

(क्रांतिकारी) उदारवादी / आशावादी / विरोध

भगवती चिरंजी लाभार्थी

← [सरकार नाम क्रम] → मोहभंग है

बौद्ध → नकारात्मकता / आशावादी

आदर्श → बड़े हैं या नहीं ...

आधुनिकीकरण ← [नैतिकता]

[इच्छा पत्र] → न देखना / नगर अंदर सकता नहीं

→ तनाव + वास्तविकता परिणामों से दूर होना

पलायनवादी

कैरियर आदर्श ←

किन्तु सफल ...

- भगवती चिरंजी लाभार्थी लेकिन ... श्रीलंका ... देश.
- निराशावादी की आशा है और की जरूरत
- विशिष्ट इतिहास पर विषय को देखना
- लगातार देखना.
- विकसित करना.

[आशावादी विरोध] → कालिख देहली

भेद आशा पर आगे रोशनी की ओर बढ़ा.

डरे हुए बालक की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है

→ महात्मा गांधी - ...

→ आशावादी ... निराशावादी ...

→ ... - ... अंतर सुधार होने में बेहतर है.

विकल्पांक - निर्भीकता रूपी ही शक्ति ही जीवन है.

SPACE FOR ROUGH WORK

- बहता पानी | ठंडा पानी हूँ.

निराशा / प्रमाद

- दूसरा हिला मन है ही घातक! — सफलता का मार्ग नहीं | असफलता का बोध नहीं

भग्नी बोझ की स्थिति.

- (कारण) — ऐतिहासिक - उपनिवेशवाद की कमजोरी ... स्वतंत्रता

नकारात्मक शिक्षा में आत्म बलानि

आर्थिक - भारत के लिए ... अर्थव्यवस्था की असफलता के कारण

बढ़ता बढ़ोतरी ... आर्थिक महत्त्व मिल ...

भय नवीन लोकता

विज्ञान में - ... लोगों की जरूरत - ... सफल

होता रहता उन्नत नहीं।

- शिक्षा प्रणाली - ... को प्रशिक्षित ... जीवन के ... रहा

... टेस्ट रहा - नहीं परीक्षा ... पढ़ना

- कुम्हार हूँ - कच्चा घड़ा, दोनों ... ... पर ... टूट जाऊँ

... की ... - ... .

- निराश निर्दल असफलता

- कालम उदा० | ... पड़ी उदा० | " ... मन ... हो

... प्रयासों ने ...

- आदि शंकराचार्य. | ... ...

- आशावाद - निराशावाद - ... ...

- डॉ० ... ... | आदि ... ...